


11/9/24

फावकी पेश हुई। लकील
वली इलाकित नही है ना ही
वली 'रकत' इलाकित है। बार -
बार आवारा लागवहि गइ। बावजूद
आवारा से भी कोई इलाकित नही
आता है। परीर होला है ते
वली अपने वास से फूले उदाकीन है
रवा आगे चलाने का इच्छुक नही
है। अतः वली का वासपता अइत
परती अइत होजये के श्रावित विधा
जात है। परावली के अुधार
होकर गहर से क. हो।


सहायक लेखक
जलशोध विभाग-दोसा (राज.)